वत्स भक्ति

भक्ति से भरे जीवन की ओर

✦ ❖ ✦

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि

॥ संस्कृत मूल पाठ ॥

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि

रम्यकपर्दिनि शैलसुते

Website: vatsabhakti.in

YouTube: @vatsabhakti

॥ जय माता दी ॥

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

॥ श्लोक 1 ॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते ।
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ॥
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १ ॥

॥ श्लोक 2 ॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते ।
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते ॥
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २ ॥

॥ श्लोक 3 ॥

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्ब वनप्रियवासिनि हासरते ।
शिखरि शिरोमणि तुङ्गहिमलय शृङ्गनिजालय मध्यगते ॥
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ३ ॥

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

॥ श्लोक 4 ॥

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्द गजाधिपते ।
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते ॥
निजभुजदण्ड निपातितखण्ड विपातितमुण्ड भटाधिपते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ४ ॥

॥ श्लोक 5 ॥

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते ।
चतुरविचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते ॥
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदुत कृतान्तमते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ५ ॥

॥ श्लोक 6 ॥

अयि शरणागत वैरिवधुवर वीरवराभय दायकरे ।
त्रिभुवनमस्तक शुलविरोधि शिरोऽधिकृतामल शुलकरे ॥
दुमिदुमितामर धुन्दुभिनादमहोमुखरीकृत दिङ्मकरे ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ६ ॥

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

॥ श्लोक 7 ॥

अयि निजहुङ्कृति मात्रनिराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते ।
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते ॥
शिवशिवशुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पितभूत पिशाचरते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ७ ॥

॥ श्लोक 8 ॥

धनुरनुषङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटके ।
कनकपिशङ्ग पृषत्कनिषङ्ग रसद्भटशृङ्ग हताबटुके ॥
कृतचतुरङ्ग बलक्षितिरङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ८ ॥

॥ श्लोक 9 ॥

सुरललना ततथेयि तथेयि कृताभिनयोदर नृत्यरते ।
कृत कुकुथः कुकुथो गडदादिकताल कुतूहल गानरते ॥
धुधुकुट धुक्कुट धिंधिमित ध्वनि धीर मृदंग निनादरते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ९ ॥

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

॥ श्लोक 10 ॥

जय जय जप्य जयेजयशब्द परस्तुति तत्परविश्वनुते ।
झणझणझिञ्झिमि झिङ्कृत नूपुरशिञ्जितमोहित भूतपते ॥
नटित नटार्ध नटी नट नायक नाटितनाट्य सुगानरते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १० ॥

॥ श्लोक 11 ॥

अयि सुमनःसुमनःसुमनः सुमनःसुमनोहरकान्तियुते ।
श्रितरजनी रजनीरजनी रजनीरजनी करवक्त्रवृते ॥
सुनयनविभ्रमर भ्रमरभ्रमर भ्रमरभ्रमराधिपते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ११ ॥

॥ श्लोक 12 ॥

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते ।
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते ॥
शितकृतफुल्ल समुल्लसितारुण तल्लजपल्लव सल्ललिते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १२ ॥

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

॥ श्लोक 13 ॥

अविरलगण्ड गलन्मदमेदुर मत्तमतङ्ग जराजपते ।
त्रिभुवनभुषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते ॥
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहन मन्मथराजसुते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १३ ॥

॥ श्लोक 14 ॥

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते ।
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले ॥
अलिकुलसङ्कुल कुवलयमण्डल मौलिमिलद्बकुलालिकुले ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १४ ॥

॥ श्लोक 15 ॥

करमुरलीरव वीजितकूजित लज्जितकोकिल मञ्जुमते ।
मिलितपुलिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जितशैल निकुञ्जगते ॥
निजगणभूत महाशबरीगण सद्गुणसम्भृत केलितले ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १५ ॥

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

॥ श्लोक 16 ॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयुखतिरस्कृत चन्द्ररुचे ।
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुलसन्नख चन्द्ररुचे ॥
जितकनकाचल मौलिमदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १६ ॥

॥ श्लोक 17 ॥

विजितसहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते ।
कृतसुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते ॥
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १७ ॥

॥ श्लोक 18 ॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे ।
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ॥
तव पदमेव परम्पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १८ ॥

महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम्

॥ श्लोक 19 ॥

कनकलसत्कलसिन्धुजलैरनुषिञ्चति तेगुणरङ्गभुवम् ।
भजति स किं न शचीकुचकुम्भतटीपरिरम्भसुखानुभवम् ॥
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम् ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १९ ॥

॥ श्लोक 20 ॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते ।
किमु पुरुहूतपुरीन्दु मुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ॥
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २० ॥

॥ श्लोक 21 ॥

अयि मयि दीन दयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे ।
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासिरते ॥
यदुचितमत्र भवत्युररीकुरुतादुरुतापमपाकुरुते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २१ ॥

हमसे जुड़ें · Follow Vatsa Bhakti

Website: https://vatsabhakti.in

YouTube: youtube.com/@vatsabhakti